ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

मन्नू भंडारी का रचना संसार

डॉ. सरोज

एसोशिएट प्रोफेसर , हिन्दी विभाग, का. सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या

सारांश

मन्नू भंडारी (३ अप्रैल १९३१ – १५ नवंबर २०२१) हिन्दी की सुप्रसिद्ध कहानीकार थीं। मध्य प्रदेश में मंदसौर जिले के भानपुरा गाँव में जन्मी मन्नू का बचपन का नाम महेंद्र कुमारी था। लेखन के लिए उन्होंने मन्नू नाम का चुनाव किया। उन्होंने एम ए तक शिक्षा पाई और वर्षों तक दिल्ली के मिरांडा हाउस में अध्यापिका रहीं। धर्मयुग में धारावाहिक रूप से प्रकाशित उपन्यास आपका बंटी से लोकप्रियता प्राप्त करने वाली मन्नू भंडारी विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में प्रेमचंद सृजनपीठ की अध्यक्षा भी रहीं। लेखन का संस्कार उन्हें विरासत में मिला। उनके पिता सुख सम्पतराय भी जाने माने लेखक थे। हिन्दी अकादमी, दिल्ली का शिखर सम्मान, बिहार सरकार, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, व्यास सम्मान और उत्तर-प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा पुरस्कृत।

परिचय

भानपुरा, मध्य प्रदेश में 3 अप्रैल, 1931 को जन्मी मन्नू भंडारी ने लेखन में उत्कृष्ट कार्य किया। मन्नू का बचपन का नाम महेंद्र कुमारी था। लेखन के लिए उन्होंने मन्नू नाम का चुनाव किया। उन्होंने स्नातकोत्तर के साथ-

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

साथ वर्षों दिल्ली विश्वविद्यालय के मिरांडा हाउस में हिन्दी का अध्यापन भी किया। वे विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में प्रेमचन्द सृजनपीठ की अध्यक्षा भी रहीं।

राजेन्द्र यादव के साथ लिखा उनका उपन्यास 'एक इंच मुस्कान' पाठकों की उनकी पसंदीदा कृतियों में से एक है। उनका कहानी संग्रह 'यही सच है' फ़िल्मी परदे पर हिट फिल्म रजनीगंधा के रूप में उभरा।[1]

'स्वामी' मन्नू भंडारी का भावप्रवण विचारोत्तेजक उपन्यास है। आत्मीय रिश्तो के बीच जिस सघन अंतर्द्वंद का चित्रण करने के लिए मन्नू भंडारी सुपरिचित है, उसका उत्कृष्ट रूप 'स्वामी' में देखा जा सकता है। सोदमिनी, नरेन्द्र और घनश्याम के त्रिकोण में उपन्यास की कथा विकसित हुई है। कथारस के साथ उपन्यास में स्थान-स्थान पर ऐसे प्रश्न उठाए गए हैं जिनकी वर्तमान में प्रसंगिकता स्वयंसिद्ध है। जैसे, 'जिसे आत्म कहते हैं वह क्या औरतों की देह में नहीं है? उनकी क्या स्वतंत्र सत्ता नहीं है? वे क्या सिर्फ आई थीं मर्दों की सेवा करने वाली नौकरानी बनाने के लिए? सुदामिनी के जीवन में अथवा इस वृतान्त में 'स्वामी' शब्द की सार्थकता क्या है, इसे लेखिका ने इन शब्दों में स्पस्ट किया है- 'घनश्याम के प्रति उनका पहला भाव प्रतिरोध और विद्रोह का है, जो क्रमशः विरक्ति और उदासीनता से होता हुआ सहानुभूति, समझ, स्नेह, सम्मान की सीढ़ियों को लांघता हुआ श्रद्धा और आस्था तक पहुंचता है। और यहीं 'स्वामी' शीर्षक पति के लिए पारस्परिक संबोधन मात्र न रहकर, उच्चतर मनुष्यता का विश्लेषण बन जाता है, ऐसी मनुष्यता जो ईश्वरीय है।'

आपका बंटी मन्नू भंडारी के उन बेजोड़ उपन्यासों में है जिनके बिना न बीसवीं शताब्दी के हिन्दी उपन्यास की बात की जा सकती है न स्त्री-विमर्श को सही धरातल पर समझा जा सकता है। तीस वर्ष पहले (1970 में) लिखा गया यह उपन्यास हिन्दी की लोकप्रिय पुस्तकों की पहली पंक्ति में है। दर्जनों संस्करण और अनुवादों का यह सिलसिला आज भी वैसा ही है जैसा धर्मयुग में पहली बार धारावाहिक के रूप से प्रकाशन के दौरान था। बच्चे की निगाहों और घायल होती संवेदना की निगाहों से देखी गई परिवार की यह दुनिया एक भयावह दुस्वप्न बन जाती है। कहना मुश्किल है कि यह कहानी बालक बंटी की है या माँ शकुन की। सभी तो एक-दूसरे में ऐसे उलझे हैं कि एक की त्रासदी सभी की यातना बन जाती है। शकुन के जीवन का सत्य है कि स्त्री की जायजश् महत्त्वाकांक्षा और आत्मनिर्भरता पुरुष के लिए चुनौती है – नतीजे में दाम्पत्य तनाव उसे अलगाव तक ला छोड़ता है। यह शकुन का नहीं, समाज में निरन्तर अपनी जगह बनाती, फैलाती और अपना क़द बढ़ाती 'नई स्त्री' का सत्य है। पति-पत्नी के इस द्वन्द्व में यहाँ भी वही सबसे अधिक पीसा जाता है बंटी, जो नितान्त निर्दोष, निरीह और असुरक्षित है। बच्चे की चेतना में बड़ों के इस संसार को कथाकार मन्नू भंडारी ने पहली बार पहचाना था। बाल मनोविज्ञान की गहरी समझ-बूझ के लिए चर्चित, प्रशंसित इस उपन्यास का हर पृष्ठ ही मर्मस्पर्शी और विचारोत्तेजक है। हिन्दी उपन्यास की एक मूल्यवान उपलब्धि के रूप में आपका बंटी एक कालजयी उपन्यास है।[2]

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

मन्नू भंडारी का महाभोज उपन्यास इस धारणा को तोड़ता है कि महिलाएं या तो घर-परिवार के बारे में लिखती हैं, या अपनी भावनाओं की दुनिया में ही जीती-मरती हैं। महाभोज विद्रोह का राजनैतिक उपन्यास है। जनतंत्र में साधारण जन की जगह कहाँ है? राजनीति और नौकरशाही के सूत्रधारों ने सारे ताने-बाने को इस तरह उलझा दिया है कि वह जनता को फांसने और घोटने का जाल बनकर रह गया है। इस जाल की हर कड़ी महाभोज के दा साहब की उँगलियों के इशारों पर सिमटती और कहती है। हर सूत्र के वे कुशल संचालक हैं। उनकी सरपरस्ती में राजनीति के खोटे सिक्के समाज चला रहे हैं और खरे सिक्के एक तरफ फेंक दिए गए हैं। हिंदी के सजग पाठक के लिए अनिवार्य उपन्यास है महाभोज!

मैं हार गई इस संग्रह की कहानियाँ मानवीय अनुभूति के धरातल पर रची गई ऐसी रचनाएँ हैं जिनके पात्र वायवीय दुनिया से परे, संवेदनाओं और अनुभव की ठोस तथा प्रामाणिक भूमि पर अपने सपने रचते हैं; और ये सपने परिस्थितियों, परिवेश और अन्याय की परम्पराओं के दबाव के सामने कभी-कभी थकते और निराश होते भले ही दिखते हों, लेकिन टूटते कभी नहीं; पुनः-पुनः जी उठते हैं। इस संग्रह में सम्मिलित कहानियों में कुछ प्रमुख हैं: ईसा के घर इनसान, गीत का चुम्बन, एक कमज़ोर लड़की की कहानी, सयानी बुआ, दो कलाकार और मैं हार गई। ये सभी कहानियाँ मन्नूजी की गहरी मनोवैज्ञानिक पकड़, मध्यवर्गीय विरोधाभासों के तलस्पर्शी अवगाहन, विश्लेषण और समाज की स्थापित आक्रान्ता, नैतिक जड़ताओं के प्रति प्रश्नाकुलता आदि तमाम लेखकीय विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिनके लिए मन्नूजी को हिन्दी की आधुनिक कहानी-धारा में विशिष्ट स्थान प्राप्त है।

एक निश्चित कालखंड की कहानियों का प्रतिनिधित्व करती 'त्रिशंकु' की इन कहानियों के पात्र जीवन के सिमटते-फैलते दायरों में सम्बन्धों के नकार और नए सिरे से अपने-अपने व्यक्तित्वों को स्वीकारने की ऊहापोह में जीते हैं। इन कहानियों में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के बनने-बिगड़ने की तफसीलें ही नहीं, मध्यवर्गीय समाज के मनोलोक की जटिलताएँ भी हैं। स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के विविध पक्षों के साथ इस संग्रह की कहानियों में समयसापेक्ष पारदर्शिता है। सम्बन्धों को ढोते रहने की थकन और प्रेम की प्रवहमान ऊष्मा है। 'त्रिशंकु', 'आते-जाते यायावर' और 'दरार भरने की दरार' जैसी चर्चित कहानियाँ नारी-पुरुष सम्बन्धों को कई कोणों से परिभाषित करती हैं। सहज कथा-विन्यास और शिल्प के संयोजन की दृष्टि से 'त्रिशंकु' की कहानियों का हिंदी कथा साहित्य में स्थायी महत्त्व है।[3]

एक स्त्री के 'अपने' व्यक्तित्व की आँच वे नहीं सँभाल पातीं, और पुरुष, जिसको परम्परा ने घर का रक्षक, घर का स्थपति नियुक्त किया है, वह उन पिघलती दीवारों के सामने पूरी तरह असहाय। यह समझ पाने में कतई अक्षम कि पत्नी की परिभाषित भूमिका से बाहर खिल और खुल रही इस स्त्री से क्या सम्बन्ध बने, कैसा व्यवहार किया जाए। और यह सारा असमंजस, सारी दुविधा और असुरक्षा एक निराधार सन्देह के रूप में फूट पड़ती है। आत्म और परपीड़न का एक अनन्त दुश्चक्र, जिसमें घर की दीवारें अन्ततः भहरा

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

जाती हैं। स्त्री-स्वातंत्रय के संक्रमण काल का यह नाटक खास तौर पर पुरुष को सम्बोधित है और उससे एक सतत सावधानी की माँग करता है कि बदलते हुए परिदृश्य से बौरा कर वह किसी विनाशकारी संभ्रम का शिकार न हो जाए, जैसे कि इस नाटक का 'अजित' होता है। स्त्री-पुरुष के बीच परिस्थितिजन्य उभर जाने वाली गाँठों की परत-दर-परत पड़ताल करने वाली महत्त्वपूर्ण नाट्य- कृति है: बिना दीवारों के घर।

साहस और बेबाकबयानी के कारण मन्नू भंडारी ने हिन्दी कथा-जगत् में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। नैतिक-अनैतिक से परे यथार्थ को निर्द्वन्द्व निगाहों से देखना उनके कथ्य और उनकी कहन को हमेशा नया और आधुनिक बनाता है। मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है और त्रिशंकु संग्रहों की कहानियाँ उनकी सतत जागरूक, सक्रिय विकासशीलता को रेखांकित करती हैं। आलोचकों और पाठकों ने मन्नूजी की जिन विशेषताओं को स्वीकार किया है, वे हैं उनकी सीधी-साफ भाषा, शैली का सरल और आत्मीय अंदाज, सधा-सुथरा शिल्प और कहानी के माध्यम से जीवन के किसी स्पन्दित क्षण को पकड़ना। कहना न होगा कि इस संग्रह में शामिल सभी कहानियाँ इन विशेषताओं का निर्वाह करती हैं। एक प्लेट सैलाब, बंद दराजों के साथ, सजा, नई नौकरीद्दये सभी कहानियाँ अक्सर चर्चा में रही हैं और इनमें मन्नूजी की कला निश्चय ही एक नया मोड़ लेती हैद्दजटिल और गहरी सच्चाइयों के साहसपूर्ण साक्षात्कार का प्रयत्न करती है।

यही सच है कथा-साहित्य में अक्सर ही नारी का चित्रण पुरुष की आकांक्षाओं (दमित आकांक्षाओं) से प्रेरित होकर किया गया है। लेखकों ने या तो नारी की मूर्ति को अपनी कुंठाओं के अनुसार तोड़-मरोड़ दिया है, या अपनी कल्पना में अंकित एक स्वप्नमयी नारी को चित्रित किया है। लेकिन मन्नू भंडारी की कहानियाँ न सिर्फ इस लेखकीय चलन की काट करती हैं, बल्कि आधुनिक भारतीय नारी को एक नई छवि भी प्रदान करती हैं। मन्नूजी नारी के आँचल को दूध और आँखों को व्यर्थ के पानी से भरा दिखाने में विश्वास नहीं रखतीं। वे उसके जीवन-यथार्थ को उसी की दृष्टि से यथार्थ धरातल पर रचती हैं, लेकिन इस बात का भी ध्यान रखती हैं कि कहानियों का यथार्थ कहानी के कलात्मक संतुलन पर भारी न पड़े। इससे मन्नूजी का कथा-संसार बहुत अपना और आत्मीय हो उठता है। 'यही सच है' मन्नू भंडारी की अनेक महत्त्वपूर्ण कहानियों का बहुचर्चित संग्रह है। स्मरणीय है कि 'यही सच है' शीर्षक-कहानी को 'रजनीगंधा' नामक फिल्म के रूप में फिल्माया गया था।[4]

मन्नू भंडारी जी हिंदी साहित्य में अपने उत्कृष्ट योगदान के लिए हिन्दी अकादमी, दिल्ली का शिखर सम्मान, बिहार सरकार, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, व्यास सम्मान और उत्तर-प्रदेश हिंदी संस्थान जैसी संस्थाओं से सम्मानित हैं।

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

विचार - विमर्श

प्रमुख कृतियाँ

- कहानी
- एक प्लेट सैलाब (१९६२)
- मैं हार गई (१९५७)
- तीन निगाहों की एक तस्वीर
- यही सच है (१९६६)
- त्रिशंकु
- आंखों देखा झूठ

अकेली - यह कहानी सोमा बुआ नाम के पात्र को केंद्र में रखकर लिखी गई है। सोमा अपने पास पड़ोस से घुलने-मिलने के प्रयासों के बावजूद अकेली पड़ जाती है। वह अकेली इसलिए है क्योंकि वह परित्यक्ता है, बूढ़ी हो चली है तथा उसका पुत्र भी उसे छोड़कर जा चुका है। अपने परिवेश के साथ घुलने मिलने के उसके प्रयास भी एकतरफा हैं।

उपन्यास

- आपका बंटी (१९७१) - यह उपन्यास विवाह विच्छेद की त्रासदी में पिस रहे एक बच्चे को केंद्र में रखकर लिखा गया था।
- एक इंच मुस्कान(१९६२) - लेखक और पति राजेंद्र यादव के साथ लिखा गया उनका उपन्यास एक इंच मुस्कान पढ़े लिखे आधुनिक लोगों की एक दुखांत प्रेमकथा है जिसका एक-एक अंक लेखक-द्वय ने क्रमानुसार लिखा।
- महाभोज (१९७९) - यह उपन्यास नौकरशाही और राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार के बीच आम आदमी की पीड़ा को उद्घाटित करता है। इस उपन्यास पर आधारित नाटक अत्यधिक लोकप्रिय हुआ था।

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

इसी प्रकार यही सच है पर आधारित रजनीगंधा नामक फिल्म अत्यंत लोकप्रिय हुई थी और उसको १९७४ की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था।[5]

नाटक

`बिना दीवारों का घर' (१९६६)

परिणाम

पुरस्कार

महाभाज 1980-1981 के लिए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान (उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान)

भारतीय भाषा परिषद (भारतीय भाषा परिषद), कोलकाता, 1 9 82

काला-कुंज सन्मान (पुरस्कार), नई दिल्ली, 1 9 82

भारतीय संस्कृत संसद कथा समरोह (भारतीय संस्कृत कथा कथा), कोलकाता, 1 9 83

बिहार राज्य भाषा परिषद (बिहार राज्य भाषा परिषद), 1991

राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, 2001- 02

महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी (महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी), 2004

हिंदी अकादमी, दिलीली शालका सन्मैन, 2006- 07

मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन (मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन), भवभूति अलंकरण, 2006- 07

के.के. बिड़ला फाउंडेशन ने उन्हें अपने काम के लिए 18 वें व्यास सम्मान के साथ प्रस्तुत किया, एह कहानी यहे भी, एक आत्मकथात्मक उपन्यास

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

निष्कर्ष

मन्नू भंडारी सिर्फ हिंदी साहित्य की नहीं, पूरे समाज की अभिभावक दिखती हैं। वह अपने लेखन से प्यारी सी थपकी देते हुए समाज को हर मौके पर टोकती चलती हैं। कभी पुरुषवादी सोच पर गंभीर चोट करती हैं तो कभी बालमन के मनोविज्ञान को गहरे तक छू लेती हैं। मन्नू भंडारी के जाने से हिंदी साहित्य जगत में एक ऐसा खालीपन पैदा हो गया है, जो हमेशा बना रहेगा।

मन्नू भंडारी का साहित्य जगत में प्रमुख योगदान कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में रहा। उनकी वस्तुनिष्ठता और नाटकीयता का दृढ़ निश्चय ही उनकी प्रमुख शैली रही। उनका जन्म 3 अप्रैल 1931 को मध्य प्रदेश के मंदसौर में हुआ। वह दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ाती रहीं और रचना क्षेत्र में भी बराबर सक्रिय बनी रहीं।

आजादी के बाद के लेखन में जब कहानी का एक अलग तरह का दौर चला तो उसे नाम मिला 'नई कहानी'। इस दौरान कहानी लेखन के शिल्प में कई बड़े बदलाव आए। मन्नू भंडारी की बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने इस बदलते परिवेश में खुद को स्त्री मनोभावों की लेखिका के रूप में स्थापित किया। स्त्री लेखन में तीन प्रमुख स्तंभ कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा और मन्नू भंडारी में से मन्नू भंडारी सबसे प्रमुख स्तंभ बनकर उभरीं। उस दौरान उभरते मध्य वर्ग के गुस्से और संघर्ष की झलक उनकी रचनाओं में दिखती है। आजादी के बाद लोगों में पैदा हुई इच्छाओं और आशाओं पर भी जमकर लिखा। उन्होंने महानगरीय जीवन में स्त्रियों की दशा के भी कई चित्र खींचे। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है उनकी कहानी 'यही सच है'। यह उस वक्त के लिए एक नई स्त्री की आवाज थी। उनकी इस कहानी पर आधारित फिल्म रजनीगंधा बेहद चर्चित रही।

मन्नू भंडारी आम जीवन में जितनी सरल दिखती थीं, उनका लेखन इसके उलट उतना ही तल्ख है। उन्होंने मध्य वर्ग के जीवन को बेहद करीब से महसूस किया और उसे अपने रचना संसार में सधे अंदाज में शामिल कर लिया। उनके लेखन में कहीं कोई शोरगुल नहीं है। वह बेहद सलीके से अपनी बात कह देती हैं। उनके रचना संसार की सबसे बड़ी खूबी यही है कि वह कठिन से कठिन बात कहने के लिए भी कठिन भाषा का सहारा नहीं लेतीं।[3,4]

उन्हें निजी जीवन में एकसाथ कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। वह इस पुरुषवादी समाज में हर संघर्ष का डटकर सामना करती रहीं। उनकी कहानियों में महिलाओं के खातिर लड़ी लड़ाई से उपजी जीत बार-बार चमकती है। वह इसे अपनी हर अगली रचना में लगातार दर्ज करती चलती हैं।

उन्होंने चर्चित साहित्यकार राजेंद्र यादव से विवाह किया। लेकिन, वह राजेंद्र यादव की छाया में कहीं भी

IJIRSET

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

छोटी पड़ती नहीं दिखीं। उनके साहित्य ने खुद अपनी अलग पहचान बनाई। यह विवाह कुछ दशकों तक चलकर टूट गया। मन्नू भंडारी जब राजेंद्र यादव से अलग हुईं तो इससे पैदा हुई पीड़ा ने उन्हें हिलाकर रख दिया। उन्होंने महसूस किया कि एक विवाहित युगल का अलग होना सिर्फ एक महिला या एक पुरुष के हिस्से की त्रासदी नहीं है, बल्कि उस बच्चे के जीवन पर आई गंभीर त्रासदी भी है, जिसके माता-पिता अलग हो गए। जब उन्होंने बच्चे की घुटन को रचना का रूप दिया तो यह कालजयी उपन्यास 'आपका बंटी' बन गया।

इस उपन्यास का हिंदी साहित्य जगत में कद कितना बड़ा है, इसका अंदाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि इसका जिक्र किए बिना बीसवीं सदी के हिंदी उपन्यास जगत की चर्चा अधूरी रह जाएगी। यह उपन्यास बालमन के प्रति उनकी गहरी संवेदना को भी दर्शाता है। वह अपने ऊपर बीत रही त्रासदी से बड़ी पीड़ा बच्चे के मन में पैदा हुई घुटन को मानती हैं और बताती हैं कि टूटते परवारों के बीच बच्चे किस यातना से गुजरते हैं। साल 1970 में लिखा गया यह उपन्यास बीतते समय के साथ अधिक प्रासंगिक होता जा रहा है।

'महाभोज' उपन्यास में मन्नू भंडारी अफसरशाही में फैले भ्रष्टाचार को बेहद बारीक ढंग से सामने रखती हैं। वह इस उपन्यास के जरिए बताती हैं कि भ्रष्ट तंत्र के सामने लाचार आम आदमी किस तकलीफ से गुजरता है। यह उपन्यास स्वतंत्रता संग्राम के ऊंचे आदर्शों, त्याग और जनसेवा की विदाई की कथा है। मन्नू भंडारी ने राजनीति के बदलते मुहावरों को सामने रख दिया 'महाभोज' में। जिन दिनों यह उपन्यास आया, उस समय हिंदी साहित्य में दलितों के मुद्दों पर शायद ही कोई बात होती थी। लेकिन मन्नू भंडारी ने दलितों के शोषण का जो चित्र महाभोज में खींचा, उसने हिंदी समाज को मथ डाला। दलित राजनीति के शोर में जमीनी हकीकत को समझने की जब भी कोशिश होगी, 'महाभोज' प्रतिरोधी स्वर के एक दस्तावेज के रूप में याद किया जाता रहेगा।[5,6]

संदर्भ

1) "हिंदी की सुप्रसिद्ध लेखिका और कथाकार मन्नू भंडारी का निधन". अमर उजाला. अभिगमन तिथि 15 November 2011
2) "लेखिका मन्नू भंडारी का निधन, 'आपका बंटी' और 'महाभोज' जैसी कालजयी रचनाओं ने दिलाई थी पहचान". आज तक. अभिगमन तिथि 15 नवम्बर 2002
3) मन्नू भंडारी (1994). Dasa pratinidhi kahāniyām̐. Kitabghar Prakashan. पपृ° 6–. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-81-7016-214-8.
4) "नहीं रहीं 'महाभोज' और 'आपका बंटी' लिखने वाली मशहूर लेखिका मन्नू भंडारी, 90 की उम्र में निधन". नवभारत टाइम्स. अभिगमन तिथि 15 नवम्बर 2001

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

5) Singh, R.S. (1973). "Mannu Bhandari". Indian Literature. 16 (1/2): 133–142. JSTOR 24157435.
6) "मन्नू भंडारी". अभिव्यक्ति. मूल से 3 फ़रवरी 2010 को पुरालेखित.